इस किताब पर
राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त
फ़िल्म भी बनी है।

मिलिंद बोकील

शाला

मराठी से हिंदी अनुवाद
सुप्रिया सहस्त्रबुद्धे

शाला

मिलिंद बोकील

हिंदी अनुवाद

सुप्रिया सहस्त्रबुद्धे

SHALA (Novel)

By Milind Bokil

Tr. By Supriya Sahasrabuddhe

Published By

RETHINK BOOKS

Vill. Fatehgarh Chhanna

P.O. Deh-Kalan

Teh./Distt. Sangrur-148034

Sub-Office: 28A, Nilothi Ext.,

Vikaspuri Ext., Chandar Vihar,

New Delhi-110041

© Publisher

YEAR: 2024

ISBN: 978-93-94737-89-1

Printed in India

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior consent in any form of binding or cover than that in which it is published.

प्रस्तावना

1970 के दशक के दौरान पुणे के एक स्कूल की पृष्ठभूमि पर आधारित "शाला" (स्कूल) मिलिंद बोकील द्वारा लिखित एक लोकप्रिय मराठी उपन्यास है, जिसे 2003 में प्रकाशित किया गया था। उपन्यास विशेष रूप से नायक, मुकुंद जोशी और उनके दोस्तों के समूह की आंखों के माध्यम से, अपनी सभी मासूमियत, जटिलताओं और चुनौतियों के साथ किशोरावस्था के सार को खूबसूरती से दर्शाता है। इसकी ताकत इसके संबंधित पात्रों और उनकी भावनाओं के यथार्थवादी चित्रण में निहित है। जिसे बोकील द्वारा शिरोडकर के साथ मुकुंद के मोह को एक कोमल और वास्तविक स्पर्श के साथ चित्रित किया गया है, जो किसी भी उस व्यक्ति के साथ प्रतिध्वनित होता है, जिसने पहले प्यार के दर्द का अनुभव किया है।

मिलिंद बोकील ने "शाला" में किशोरावस्था की मासूमियत, दोस्ती और चुनौतियों को खूबसूरती से दर्शाया है। यह जीवन के एक निर्णायक चरण के दौरान किशोर भावनाओं, रिश्तों और आत्म-खोज की यात्रा की जटिलताओं को दर्शाता है। उपन्यास के नायक, मुकुंद जोशी और उनके दोस्त – सूर्य, चित्रे और फवाद्य – स्कूली जीवन, दोस्ती, पहले प्यार और सामाजिक अपेक्षाओं की जटिलताओं को नेविगेट करते हैं। लेकिन उपन्यास न केवल उनकी व्यक्तिगत यात्रा के बारे में है, बल्कि ग्रामीण शिक्षा प्रणाली, परिवार की गतिशीलता और उस समय के सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण भी है।

स्कूली जीवन और किशोर मित्रता के चित्रण के अलावा, "शाला" उस समय के

विभिन्न सामाजिक मुद्दों और सांस्कृतिक पहलुओं पर भी प्रकाश डालता है। यह उपन्यास प्यार, दोस्ती, पारिवारिक गतिशीलता और सामाजिक मानदंडों के विषयों में निर्बाध रूप से बुनता है, जो पाठकों को पात्रों के सामने आने वाली चुनौतियों और दुविधाओं की बारीक खोज प्रदान करता है। मुकुंद की आत्म-खोज और विकास की यात्रा के माध्यम से, लेखक किशोर भावनाओं की जटिलताओं और उम्र के आने के सार्वभौमिक संघर्षों पर भी बात करता है।

"शाला" के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक इसकी उदासीनता की भावना पैदा करने और पाठकों को एक पुराने युग में वापस ले जाने की क्षमता है। मिलिंद बोकील के विशद विवरण और विस्तार पर ध्यान देने से 1970 के दशक की पुणे की एक समृद्ध टेपेस्ट्री बनती है, जो अपनी जगहों, ध्वनियों और सांस्कृतिक बारीकियों के साथ पूरी होती है। लेखक की लेखन शैली आकर्षक और प्रेरक दोनों है, जो पाठकों को मुकुंद और उसके दोस्तों की दुनिया में आकर्षित करती है और उन्हें ऐसा महसूस कराती है कि वे किरदारों के साथ वहीं हैं, अपनी खुशियों और दुखों का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

"शाला" के पात्रों को गहराई और बारीकियों के साथ जीवन में लाया जाता है, प्रत्येक के पास अपनी-अपनी विचित्रताएं, सपने और कमजोरियां होती हैं। करिश्माई मुकुंद से लेकर उनके वफादार दोस्तों और रहस्यमय प्रेम रुचि तक, पात्र एक जीवंत पहनावा बनाते हैं, जो अपनी सभी जटिलताओं में युवाओं के सार को पकड़ता है। पात्रों के बीच संबंधों और बातचीत को प्रामाणिकता और भावनात्मक गहराई के साथ चित्रित किया गया है, जिससे

पाठकों को उनकी दुनिया में आकर्षित किया जाता है और सहानुभूति और संबंध की भावना को बढ़ावा मिलता है।

"शाला" के किरदार अच्छी तरह से विकसित और संबंधित हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपने अनूठी व्यक्तित्व, सपने और कमजोरियां हैं। मुकुंद और उसके दोस्तों की शरारती हरकतों से लेकर आत्मनिरीक्षण और आत्म-साक्षात्कार के मार्मिक क्षणों तक, उपन्यास विभिन्न प्रकार के अनुभवों को प्रस्तुत करता है जो सभी उम्र के पाठकों के साथ गूंजते हैं। पात्रों के बीच संबंधों को गहराई और प्रामाणिकता के साथ चित्रित किया गया है, जो कथा में जटिलता और समृद्धि की परतों को जोड़ता है।

किशोरावस्था के अपने अंतरंग चित्रण से परे, "शाला" 1970 के दशक के भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के प्रतिबिंब के रूप में भी कार्य करता है। उपन्यास उस समय के सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और चुनौतियों में एक खिड़की प्रदान करता है, जो व्यापक संदर्भ पर प्रकाश डालता है जिसमें पात्रों का जीवन प्रकट होता है। सूक्ष्म बारीकियों और पेचीदगियों के माध्यम से, लेखक एक बीते युग की एक ज्वलंत तस्वीर पेश करता है, जो पाठकों को अतीत की सांस्कृतिक टेपेस्ट्री का पता लगाने और प्रतिबिंबित करने के लिए आमंत्रित करता है।

***

मिलिंद बोकील का लेखन इसकी सादगी और गहराई से चिह्नित है। वह किशोरावस्था की

मासूमियत, जिज्ञासा और भ्रम को विस्तार से देखता है। उसकी कथा में उदासीनता और प्रामाणिकता है, जो पाठकों को पात्रों की दुनिया में लाती है और उन्हें अपने बचपन की याद दिलाती है।

मिलिंद बोकील की लेखन शैली आकर्षक और प्रेरक है, जो पाठकों को 1970 के दशक के पुणे के दर्शनीय स्थलों, ध्वनियों और भावनाओं तक ले जाती है। उसके पात्र अच्छी तरह से विकसित और संबंधित हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विचित्रता, सपने और संघर्ष हैं। इसके साथ ही विस्तार और विशद विवरणों पर लेखक का ध्यान कहानी को जीवंत करता है, जिससे पाठकों को लगता है कि वे मुकुंद की दुनिया का हिस्सा हैं।

मिलिंद बोकील की कथा कौशल "शाला" में चमकती है, क्योंकि वह चतुराई से एक कहानी बुनते हैं जो भारतीय इतिहास और समाज में एक महत्वपूर्ण अवधि के सार को दर्शाती है। मुकुंद जोशी और उनके दोस्तों के माध्यम से, उपन्यास किशोरावस्था, दोस्ती और आत्म-खोज की चुनौतियों को नेविगेट करने वाले स्कूली बच्चों के जीवन में एक खिड़की प्रदान करता है। जिसमें विस्तार और ज्वलंत विवरणों पर लेखक का ध्यान सेटिंग में जीवन की सांस लेता है, जो 1970 के दशक के पुणे के दर्शनीय स्थलों, ध्वनियों और भावनाओं का अनुभव करने के लिए पाठकों को समय पर वापस ले जाता है।

***

“शाला” एक कालातीत और मार्मिक उपन्यास है जो युवाओं, दोस्ती और अनुग्रह और संवेदनशीलता के साथ आत्म-खोज की यात्रा के सार को दर्शाता है। मिलिंद बोकील के गीतात्मक गद्य, ज्वलंत कहानी, और समृद्ध चरित्रों ने “शाला” को एक साहित्यिक मणि बना दिया है, जो अंतिम पृष्ठ को पलटने के बाद भी पाठकों के साथ गूंजता रहता है। यह एक हृदयस्पर्शी और व्यावहारिक उपन्यास है जो सभी उम्र के पाठकों के साथ प्रतिध्वनित होता है। यह संवेदनशीलता और गहराई के साथ किशोरावस्था के सार को पकड़ता है। चाहे आप आने वाली उम्र की कहानियों के प्रशंसक हों या 1970 के दशक के भारत के सामाजिक ताने-बाने की खोज में रुचि रखते हों, “शाला” एक अनिवार्य रूप से पढ़ी जाने वाली किताब है, जो आपके दिल को मोहित करते हुए छू लेगी।

डॉ. परमिंदर सिंह शौंकी